एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

फलो का पीड़क कीट आम का फुगा

(*मेघा चतुर्वेदी)
आरएनटी कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर, कपासन, (312202) चित्तौड़गढ़, (राजस्थान)
*संवादी लेखक का ईमेल पता: chaturvedimegha15@gmail.com

हिंदी नाम- सफेद फुंगा, गुजिया, आम का मटकून।
वैज्ञानिक नाम - ड्रोसिचा मैंगिफेरे (स्टेबिंग) ग्रीन।
गण - हेमिप्टेरा
गण उप - होमोप्टेरा

पोषक पौधे: खाद्य पौधों की सूची में लगभग 62 प्रजातियों के पेड़, झाड़ियाँ और जड़ी-बूटियाँ शामिल हैं, विशेष रूप से आम, अमरूद, आड़ू, मोटा, गुलाब, अरंडी, कटहल, पपीता अंजीर और नींबू आदि |

वितरण: कीट भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, म्यांमार, मलाया और फॉर्मोसा आदि में वितरित किया जाता है। भारत में, यह मुख्य रूप से असम, बिहार, दिल्ली, चेन्नई, पंजाब, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में पाया जाता है।

क्षति की प्रकृति: आम के बाग में यह कीट नवंबर में दिखाता है नवंबर में जब फली पहली बार दिखायी देते हैं तो इन की आबादी अधिक होती हे।

क्षति वयस्क मादाओं के कारण होती है जो टहनियों और फूलों से रस चूसती हैं; परिणामस्वरूप फूल सूख जाते हैं और कुछ ही फल लगते हैं। फल देने वाली टहनियाँ इतनी कमजोर होती हैं कि पक्षी या हवा के हल्के से झटके से फल नीचे गिर जाते हैं। निम्फ शहद का स्राव करते हैं जो कवक को आकर्षित करता है जिसके कारण टहनियों आदि पर काले धब्बे देखे जा सकते हैं। वसंत के दौरान हमला बहुत अधिक गंभीर होता है जब प्ररोहों को प्रचुर मात्रा में कोशिका रस की आपूर्ति होती है। हमला नवंबर से अप्रैल-मई तक रहता है और उस समय तक यह वयस्क में बदल जाता है। हमले की गंभीरता के आधार पर इस कीट से होने वाली क्षति का अनुमान 20-50 प्रतिशत तक लगाया जाता है।

जीवन चक्र: इस कीट के मादा तथा नर अलग-अलग प्रकार से विकसित होते हैं। मादा विकास में 3 अवस्थायें - अण्डा, शिशु तथा प्रौढ़ एवं नर कीट में 4 अवस्थायें शिशु प्रौढ़ होती है।

अण्डा: नवम्बर के महीने में प्रथम बार जब यह कीट दिखाई देता है उस समय शिशु

अवस्था में होते है। ये शिशु विकसित होते हैं तथा अप्रैल-मई में प्रौढ़ कीट में बदलते हैं। इस समय नर से मैथुन बाद 15-16 दिनों पश्चात् मादा अण्डे देने के लिये पेड़ से नीचे भूमि पर उतर आती है। मादा पेड़ की पास भूमि की दरारों में लगभग 8 से 15 सेमी की गहराई में अण्डे देती है। अण्डे देने से पहले मादा मोम ग्रन्थियों से जो उदर में स्थित होती है, सफेद लचीले रेशो को निकालकर एक थेली-सी बनाती है। इस थैली में मादा समूह मे अण्डे रखती है तथा इस प्रकार से कुछ दिनों के अन्तर से कई-कई थैलियों रखाती है। एक मादा अपने काल में 300 से 400 तक अण्डे देती है। प्रत्येक अण्डा 1.25 मिमी० लम्बा 1 मिमी चोड़ा बेलनाकार गुलाबी रंग का होता है जो कि बाद में भूरे रंग का होता है।

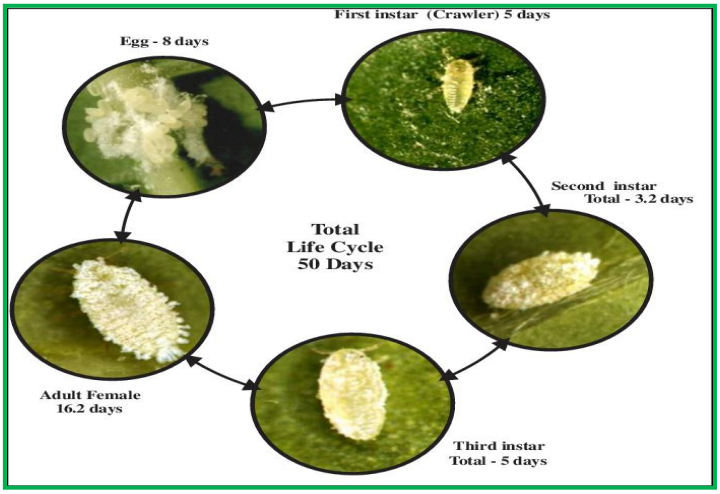

अप्रैल, मई के महीने में दिये हुये ये अण्डे नवम्बर के महीने से फूटना शुरू होते है।

शिशु- अण्डे से फूटने के बाद निकले हुये शिशु लाल रंग के होते हैं पेड़ पर चढ़ते नजर आते है नर और मादा शिशुओं में कोई अन्तर नहीं होता है। इसकी लम्बाई भी 1 मिमी होती है। लगभग 2 महीने बाद जनवरी के महीने में प्रथम बार त्वचा बदलते हैं इस प्रकार से दूसरे इसके शिशुओं से नर तथा मादा को लम्बाई के आधार पर पहचाना जा सकता है। मादा शिशु छोटे होते है जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है नर मादा में अन्तर होता है अतः ऐसे प्रकार के शिशुओं में होने वाले रूपान्तरण को अलग-अलग समझना आवश्यक है।

मादा शिशु का रूपान्तरण- दूसरे इन्सटार का शिशु 2 महीने बाद मार्च के महीने में दूसरी बार निर्मोचन करता है इस समय इनकी लम्बाई 8 मिमी होती है और तीसरा इन्सटार बनता है। यह में भूरे रंग का होता है तथा बाद में इनके शरीर के ऊपर सफेद मोम की तरह का पाउडर आ जाता है सफेद रंग के हो जाते है तथा लगभग लम्बाई के हो जाते है कभी-कभी इनके विकास में तीन बार निर्मोचन होता है ऐसी हालत में जननांगो इन्स्टार में विकसित होते हैं।

प्रौढ़- इनमें नर तथा मादा में लिंगीय भिन्नता पायी जाती है।

नर- इसमें एक जोड़ी पंख होते हैं तथा शरीर अत्यन्त मुलायम लाल रंग का होता. इनकी लम्बाई 5 मिमी० चौडाई 2 मिमी० तथा पंख विस्तार 13 मिमी० होता है। इसके एन्टिनी चक्राकार काले रंग के होते हैं। इनमें मुखांग अनुपस्थित होते हैं अतः खाते नहीं है। लगभग 1 सप्ताह तक जीवित रहते हैं।

मादा- मादा पंखहीन, मांसल चपटे शरीर वाली कीट है जिसकी लंबाई 14-16 मिमी और चौड़ाई 8.5 मिमी होती है। इसका शरीर राख के सफेद चूर्ण से ढका होता है इसमें भेदी और चूसने वाले मुंह के हिस्से होते हैं। मादा शलभ एक माह तक जीवित रहता है। जीवन चक्र लगभग 9.5 से 11 माह में पूरा होता है तथा एक वर्ष में एक ही पीढ़ी मिलती है।

नियंत्रण

1. संक्रमित पेड़ के आधार के चारों ओर मिट्टी की रेकिंग ताकि अंडे का समूह सूरज के संपर्क में आ जाए और मई और जून के महीने में गर्मी से मर जाए।

2. दिसंबर के दूसरे सप्ताह के दौरान जमीन के स्तर से 1/2 से 1 मीटर ऊपर, पेड़ के तने के चारों ओर चिपचिपा बैंड का प्रयोग करें ताकि अप्सराओं को पेड़ों पर रेंगने से रोका जा सके (4 भाग अरंडी का तेल + 5 भाग राल)। यह दो सप्ताह की अवधि के लिए प्रभावी रहता है जिसके बाद इसे दोहराया जाना चाहिए।

3. 2% मिथाइल पैराथियान धूल को 1 मीटर व्यास में पेड़ के तने के चारों ओर मिट्टी में और 1 मीटर की ऊंचाई तक तने पर भी छिड़का जा सकता है।

4. पेड़ पर रहने वाले कीड़ों को मारने के लिए निम्नलिखित कीटनाशकों में से कोई भी 15-20 लीटर पानी में मिलाकर पेड़ पर छिड़काव किया जा सकता है।

(ए) फॉस्फैमिडोन 85% - 6 मिली।

(b) मैलाथियान 50 Ec -50 मिली।

(c) एंडोसल्फान 35 Ec -20 मिली।

(d) फॉर्मोथियॉन 25 Ec -30 मिली।

प्राकृतिक शत्रु- कुछ चाल्सीड ततैया और औलिस वेस्टिला को अप्सराओं पर परजीवी करते हुए पाया गया है।